



# एआई और सोशल मीडियाके दौर में खतरेमें बच्चों की प्राइवेसी



बच्चों की दुनिया अब सिर्फ घर, स्कूल और दोस्तों तक सीमित नहीं रह गई है। मोबाइल की स्क्रीन पर वे नई चीजें सीखते हैं, गेम खेलते हैं, वीडियो देखते हैं और एआई टूल्स से अपने सवालों के जवाब भी तलाशते हैं। इंटरनेट ने बच्चों के लिए सीखने और अपनी रचनात्मकता दिखाने के कई रास्ते खोले हैं, लेकिन इसके साथ कुछ ऐसी चुनौतियां भी सामने आई हैं, जिनके बारे में हर माता-पिता को जानना चाहिए. बच्चे अनजाने में अपनी निजी जानकारी साझा कर सकते हैं, किसी फर्जी प्रोफाइल पर भरोसा कर सकते हैं या अपनी तस्वीरों के गलत इस्तेमाल का शिकार हो सकते हैं। ऐसे में जरूरी है कि पेरेंट्स बच्चों को डराने के बजाय उन्हें ऑनलाइन दुनिया की चुनौतियों को समझना और उनसे बचना सिखाएं.बच्चों को यह बताना जरूरी है कि ऑनलाइन प्राइवेसी का मतलब सिर्फ अपना पासवर्ड छिपाकर रखना नहीं है. उनकी तस्वीरें, वीडियो, लोकेशन, स्कूल की जानकारी और निजी बातचीत भी उनकी पहचान का हिस्सा हैं. इन्हें इंटरनेट पर साझा करने से पहले सावधानी बरतनी चाहिए. बच्चों को समझाएं कि किसी ऑनलाइन दोस्त के बार-बार मांगने पर भी निजी तस्वीरें या जानकारी भेजना जरूरी नहीं है. अगर कोई व्यक्ति उन्हें ऐसा करने के लिए दबाव डालता है, तो वे बिना किसी डर के माता-पिता को बता सकते हैं.आज कई बच्चे एआई चैटबॉट से होमवर्क समझते हैं, कहानियां लिखते हैं और नए विषयों के बारे में सीखते हैं लेकिन एआई का इस्तेमाल करते समय उन्हें यह समझना चाहिए कि हर प्लेटफॉर्म की डेटा संबंधी नीतियां अलग हो सकती हैं. बच्चों को किसी एआई टूल पर अपना घर का पता, फोन नंबर, पासवर्ड, पहचान से जुड़े दस्तावेज या परिवार की निजी तस्वीरें अपलोड नहीं करनी चाहिए. पेरेंट्स को भी बच्चों के साथ मिलकर यह जांचना चाहिए कि कोई ऐप किस तरह की जानकारी मांग रहा है और उसका इस्तेमाल किस उद्देश्य से करता है. बच्चों को सोशल मीडिया पर अपनी जिंदगी का हर पल साझा करने की जरूरत नहीं है. स्कूल की यूनिफॉर्म में तस्वीर, घर के बाहर की फोटो या छुट्टियों के दौरान लाइव लोकेशन पोस्ट करने से उनकी पहचान और दिनचर्या का अंदाजा लगाया जा सकता है. पेरेंट्स बच्चों के अकाउंट की प्राइवेसी सेटिंग्स जांचें और अनजान लोगों की पहुंच सीमित रखें. साथ ही, उन्हें बताएं कि किसी की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार करने से पहले उसकी पहचान को लेकर सावधान रहना चाहिए।




## अतीत

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

मानव जीवन क्षणभंगुर है, फिर भी हम प्रायः अतीत के दुःखों और स्मृतियों के बोझ तले दबे रहते हैं। बाल्यावस्था की निर्मल हँसी, नेत्रों की वह स्वाभाविक चमक और सहज प्रसन्नता समय के साथ कहीं विलुप्त-सी हो जाती है। उसके स्थान पर क्रोध, संताप और कुंठा का आवरण छा जाता है। जब जीवन इतना संक्षिप्त है, तो हम इसे विषाद में क्यों व्यतीत करें? कष्टदायक स्मृतियों से उबरने का प्रथम उपाय है-अतीत को स्वप्नवत् देखना। जो बीत चुका है, वह पुनः लौटकर नहीं आता। यदि हम अपने अतीत को एक चलचित्र की भाँति देखें, तो उससे उत्पन्न पीड़ा का प्रभाव कम होने लगता है। केवल एक क्षण के लिए अतीत को विस्मृत कर वर्तमान में स्थित हो जाना ही जीवन को पुनः प्रस्फुटित कर देता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती-जाती रहती हैं; यह परिवर्तन ही जीवन का स्वभाव है। अतः यह स्मरण रखना कि हम पूर्व में भी कठिनाइयों से उबरे हैं, हमें वर्तमान संकटों से पार पाने का आत्मविश्वास प्रदान करता है। द्वितीय उपाय है - आत्मबल और शौर्य का जागरण। मनुष्य के भीतर अपार ऊर्जा और सामर्थ्य निहित है, किंतु वह प्रायः स्वयं उस पर विश्वास नहीं करता। जब व्यक्ति यह संकल्प करता है कि मैं प्रत्येक परिस्थिति का सामना कर सकता हूँ, तभी उसके भीतर सुप्त शक्ति जाग्रत होती है। यह आंतरिक विश्वास ही उसे परिस्थितियों का प्रबंधन करने में समर्थ बनाता है। तृतीय उपाय है-जीवन की अनित्यता का बोध। चाहे व्यक्ति सफलता के शिखर पर हो अथवा असफलता के गर्त में, अंततः प्रत्येक को मृत्यु का वरण करना है। यह बोध जीवन के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करता है। जब हम अपने जीवन और घटनाओं के साक्षी बन जाते हैं, तब राग-द्वेष का प्रभाव क्षीण हो जाता है और एक सहज शांति का अनुभव होता है। जीवन एक नाटक की भाँति है, जिसका पटाक्षेप निश्चित है; अतः उसमें अत्यधिक आसक्ति अनावश्यक है। चतुर्थ और अंतिम उपाय है - एक उच्चतर शक्ति पर विश्वास। मनुष्य कभी भी पूर्णतः एकाकी नहीं होता। एक करुणामयी, दयालु सत्ता सदैव उसके साथ होती है, उसका मार्गदर्शन करती है। चाहे उसे ईश्वर कहा जाए, चेतना या उच्चतर आत्मा उसका अस्तित्व निर्विवाद है। इस विश्वास से मन को आश्रय और स्थिरता प्राप्त होती है। अंततः, जीवन का सार बौद्धिक समझ में नहीं, अपितु अनुभव में निहित है। प्रेम, आनंद और शांति को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता; उन्हें केवल जिया जा सकता है।

# भारतके पास मौजूद है दुनियाकी सबसे ऊर्जावान-कामकाजी आबादी

दुनिया में सबसे कम माध्यिका आयु यानी मीडियन एज की बात करें तो अफ्रीकी देश नाइजर इस सूची में सबसे ऊपर आता है। नाइजर में आबादी की औसत उम्र मात्र 14.8 से 14.9 वर्ष के आसपास है, जिसका



सीधा मतलब यह है कि इस देश की आधी से अधिक जनसंख्या 15 साल से कम आयु की है। नाइजर के अलावा युगांडा, माली और मलावी जैसे अन्य अफ्रीकी राष्ट्रों में भी औसत आयु 16 से 17 वर्ष के बीच ही बनी हुई है. हालांकि, अगर जीवन प्रत्याशा यानी लोगों के औसतन जीवित रहने की उम्र की बात की जाए, तो नाइजीरिया और चाड जैसे देशों में यह आंकड़ा महज 54 से 55 साल के आसपास सिमट कर रह जाता है.दुनिया में सबसे अधिक जीवन प्रत्याशा और सबसे ज्यादा औसत उम्र वाले देशों में यूरोपीय व एशियाई क्षेत्र आगे हैं. यूरोपीय देश मोनाको में लोगों की औसत जीवन प्रत्याशा सबसे अधिक करीब 86.73 से 87 वर्ष दर्ज की गई है, जबकि वहां की आबादी की माध्यिका आयु भी दुनिया में सर्वाधिक 53.1 वर्ष है. इसके अलावा हांगकांग में औसत जीवन प्रत्याशा 85.9 वर्ष, सैन मैरिनो में 86.03 वर्ष और जापान में 85.15 वर्ष के करीब पाई जाती है. जापान में आबादी की मीडियन एज लगभग 50.2 वर्ष है, जो इसे दुनिया के सबसे बुजुर्ग समाजों में से एक बनाती है. भारत वर्तमान समय में जनसांख्यिकीय दृष्टि से बेहद मजबूत और संतुलित स्थिति में खड़ा है. देश की औसत उम्र लगभग 28.4 वर्ष है, जिसका तात्पर्य यह है कि भारत के पास इस वक्त दुनिया की सबसे बड़ी और ऊर्जावान कामकाजी आबादी मौजूद है।

# तलाकशुदा महिलाओंका मार्केट, मोटापा है खूबसूरतीका पैमाना

दुनिया में कई तरह की संस्कृति-भाषा का चलन है। सुंदर सुडौल शरीर अगर हर देश में खूबसूरती का पैमाना माना जाता है मगर दुनिया का एक देश ऐसा भी हैं जहां पर



मोटापा खूबसूरती का पैमाना है। इस देश में कई अजीबो-गरीब परंपराएं हैं। यही पर डिवोर्स का मार्केट लगता है। यहां पर तलाक सिर्फ मौखिक होता है। तलाक को खुशी का पल माना जाता है। इस देश में तलाकशुदा महिलाओं से शादी करने का रिवाज है। यह देश कौन सा है, कहां पर है, अफ्रीकी महाद्वीप के पश्चिमी हिस्से पर बसा देश मॉरिटानिया किसी अजूबे से कम नहीं है। यह देश सहारा रेगिस्तान, इस्लामिक इतिहास, प्राचीन संस्कृति के लिए दुनियाभर में जाना जाता है। यहां कई तरह के पक्षी पाए जाते हैं। इस देश का ज्यादातर हिस्सा रेगिस्तान है. यहां की आबादी 60 लाख के आसपास है। इस देश की राजधानी नुआकशोत है। अटलांटिक महासागर के तट पर बसा यह शहर सबसे ज्यादा गुलजार रहता है। यह इस देश का सबसे बड़ा शहर है। देश की एक तिहाई आबादी इस शहर में रहती है. 14 लाख से ज्यादा लोग इस शहर में रहते है.यह एक इस्लामिक देश है। विश्व प्रसिद्ध चिंगुएटी मस्जिद भी इस देश में है। 1958 तक यह केवल एक छोटा सा मछुआरों का गांव था। मॉरिटानिया में फ्रांस का शासन था. 1960 के आसपास आजादी मिली. यहां के लोग गांवों में सहारा रेगिस्तान के बीच टेंट बनाकर रहते हैं। यहां पर गुलामी की प्रथा 2007 तक रही. यहां पर ऊंट खूब पाले जाते हैं। इसे ऊंटों का देश भी कहा जाता है.मॉरिटानिया की आबादी का 30 फीसदी हिस्सा गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहा है। इस देश में तेल-प्राकृतिक गैस का अथाह भंडार है. देश प्राकृतिक खजाने से भरा हुआ है, लोह अयस्क, सोना, तांबा, जिप्सम, फास्फेट सबकुछ है लेकिन सही प्रबंधन न होने के चलते यह कुदरत का खजाना भी गरीबी नहीं मिटा पा रहा है.मॉरिटानिया में कोई भी शख्स कितनी भी शादियां कर सकता है. तलाक दे सकता है। यहां पर जो महिलाएं तलाक ले लेती हैं, उन्हें सुंदर और समझदार माना जाता है। यहां पर जो महिलाएं मोटी होती हैं, उन्हें सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। यहां पर खूबसूरती का पैमाना मोटापा है. जो महिलाएं मोटी होती हैं, माना जाता है कि वो खाते-पीते घर से हैं. आर्थिक रूप से सक्षम हैं. वैसे भी इस देश में महिलाएं बाजार-हाट में सामान बेचती नजर आती हैं. यहां पर शादी भी आजीविका का एक जरिया है।

# पेड्डी में अपने रोल को लेकर शर्मिंदा हूं-जाह्नवी

एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर ने कहा की फिल्म पेड्डी में अपने रोल के लिए शर्मिंदा हैं। उन्होंने माना की इस रोल से यौन अपराधों को प्रमोट किया गया। जाह्नवी ने आगे कहा कि शूटिंग के समय ही उन्हें इसके खिलाफ ज्यादा मजबूती से आवाज उठानी चाहिए थी। जाह्नवी ने यह बात कॉफी विद करण 9 प्रतिशत के दौरान कही, जहां करण जोहर ने उनसे इस विवाद पर सवाल पूछा था। जाह्नवी कपूर ने कहाइसके दो पहलू हैं- एक तरफ लोग आपके सपोर्ट में थे कि आपके रोल को गलत तरीके से दिखाया गया। वहीं दूसरी तरफ लोगों का कहना था कि जब आप खुद सेट पर मौजूद थीं, तो आपने इसे रोका क्यों नहीं? मुझे बहुत कुछ महसूस हुआ, करण। मैं इस बारे में बात करने से इसलिए हिचक रही थी, क्योंकि कई लोगों ने फिल्म पर बहुत मेहनत की थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे क्या कहना चाहिए। मुझे यह भी नहीं पता था कि वास्तव में कहने के लिए कुछ है या नहीं। जाह्नवी ने यह भी कहा, मेरे हिस्से की जिम्मेदारी लेना जरूरी है। उस पूरे विवाद में मेरी जितनी भी भूमिका थी, उसकी जिम्मेदारी मुझे लेनी चाहिए। ऐसे नैरेटिव का समाज पर नेगेटिव असर पड़ सकता है। खासकर महिलाओं पर इसका असर हो सकता है। यह बात मेरे जमीर पर भारी है। इस बात की शर्मिंदगी मेरे साथ हमेशा रहेगी। जाह्नवी ने कहा कि वह इसे लेकर ज्यादा बड़ा मुद्दा बना सकती थीं। उन्होंने कहा, क्या मैं और कुछ कर सकती थी? क्या मैं ज्यादा सतर्क रह सकती थी? क्या मैं इसे लेकर ज्यादा जोर से आवाज उठा सकती थी? इन सभी सवालों का जवाब सौ फीसदी हां है। जाह्नवी ने कहा, क्या यह प्रॉब्लम वाली बात थी? क्या इसमें महिला को वस्तु की तरह दिखाया गया था? क्या इसने कहानी के लेवल पर यौन अपराधों को प्रमोट किया? इन सभी सवालों का जवाब हां है। अब मैं सिर्फ यह सुनिश्चित कर सकती हूं कि ऐसा दोबारा न हो। जाह्नवी ने कहा कि वह अपनी बात रखते हुए ऐसा नहीं दिखना चाहतीं कि वह जिम्मेदारी किसी और पर डाल रही हैं। हालांकि, उन्होंने बताया कि एक्टर्स कई बार डायरेक्टर के निर्देशों का पालन करने की स्थिति में होते हैं। मैं यह बात इसलिए नहीं कह रही कि जिम्मेदारी किसी और पर डाल दूं, लेकिन आप जानते हैं कि यह कैसा होता है। आपको लगता है कि डायरेक्टर जो कह रहे हैं, आपको वही करना है। आपको प्रोफेशनल रहना होता है। आपको डायरेक्टर की बात सुननी होती है। स्क्रिप्ट में हर बार यह साफ नहीं होता कि सीन पर्दे पर कैसा दिखेगा। अक्सर यह नहीं लिखा होता कि कैमरा एंगल क्या होंगे। बहुत कम ऐसा होता है कि पूरी तरह बाउंड स्क्रिप्ट आपके पास हो। इसलिए मैं उपलब्ध जानकारी के आधार पर चीजों को कम समस्याग्रस्त बनाने की कोशिश कर रही थी। जाह्नवी ने माना कि वह प्रिविलेज वाली स्थिति से आती हैं। उन्होंने कहा, लेकिन इसके साथ ही मुझे अपने हिस्से की जिम्मेदारी भी लेनी होगी। मैं प्रिविलेज वाली जगह से आती हूं। मुझे इस प्रिविलेज का फायदा उठाना चाहिए था। वैसे भी प्रिविलेज वाली होने के लिए मुझे आलोचना झेलनी ही है, इसलिए मुझे इसका इस्तेमाल करना चाहिए था। पेड्डी में जाह्नवी कपूर के किरदार अचियम्मा को दिखाने के तरीके पर कई दर्शकों ने सवाल उठाए थे। दर्शकों ने किरदार के सेक्सुअलाइजेशन और ऑब्जेक्टिफिकेशन को लेकर चिंता जताई थी।




